पद ११

(राग: अल्हैया बिलावल - ताल: झंपा)

श्रीगुरु माणिक जय गुरु माणिक। हाचि गुरु उपदेश मुख्य आम्हां। दान व्रत यज्ञ हे स्नान गंगा। सोमपान मधु अमृतरस सेवुं नामा।।धु.।। पुण्य जय सत्कीर्ति दक्षिणोत्तर मार्ग। हेचि अमनस्क हट तारकादि। ज्ञान हें ध्यान हें महावाक्य भजन हे। भक्तकल्पद्रुमा सार्वभौमा।।१।। क्षेत्र माणिक मंत्र तीर्थ संगम वास। भिक्षान्न अवधूत भजन द्या देवा। बोध मार्तण्ड हा विश्वहृदयीं वसो। जन्मजन्मीं हेंचि दान द्या देवा।।१।।